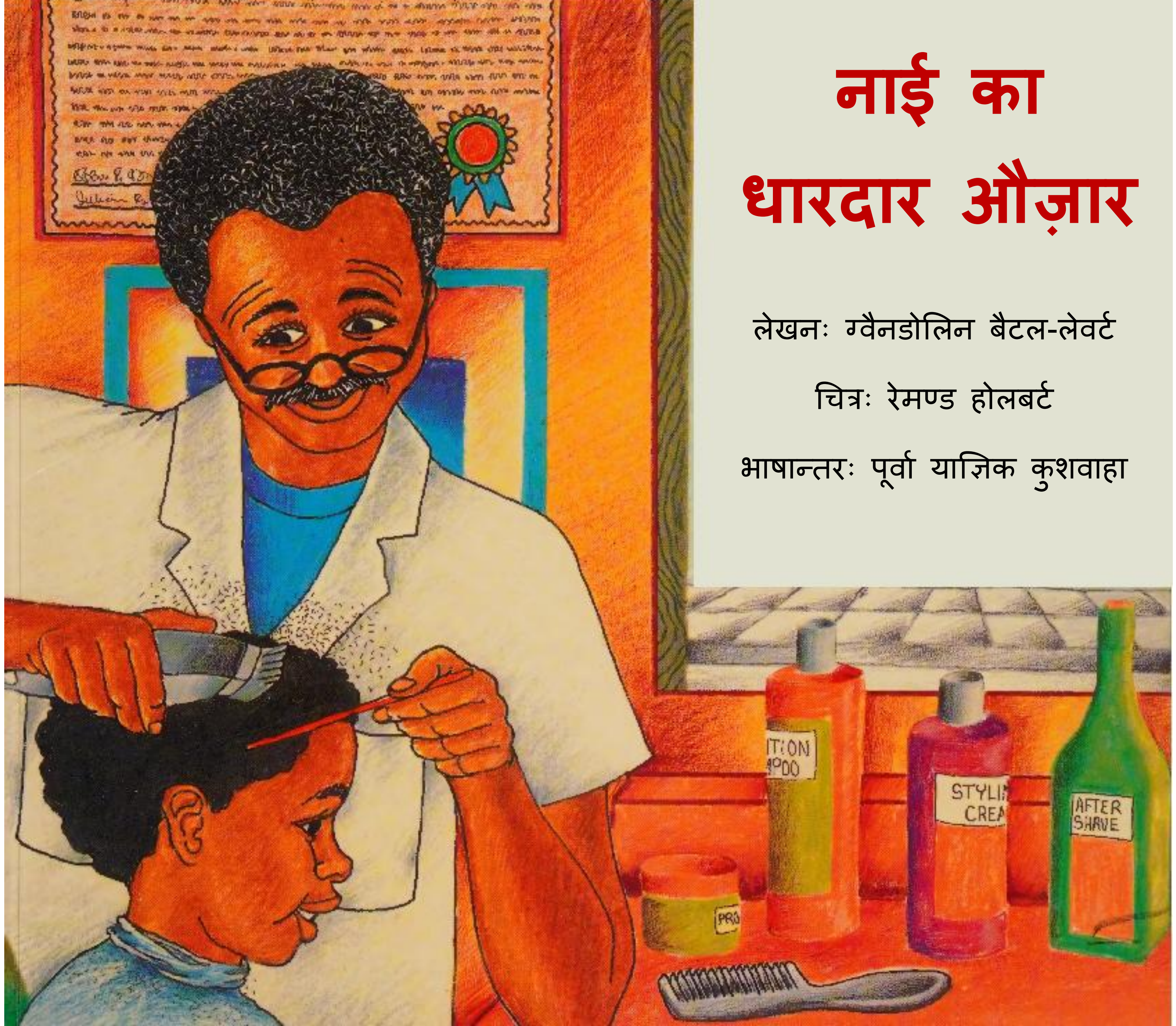
नाई का धारदार औज़ार

लेखनः ग्वैनडोलिन बैटल-लेवर्ट

चित्रः रेमण्ड होलबर्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



नाई का धारदार औज़ार



लेखनः ग्वैनडोलिन बैटल-लेवर्ट

चित्रः रेमण्ड होलबर्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



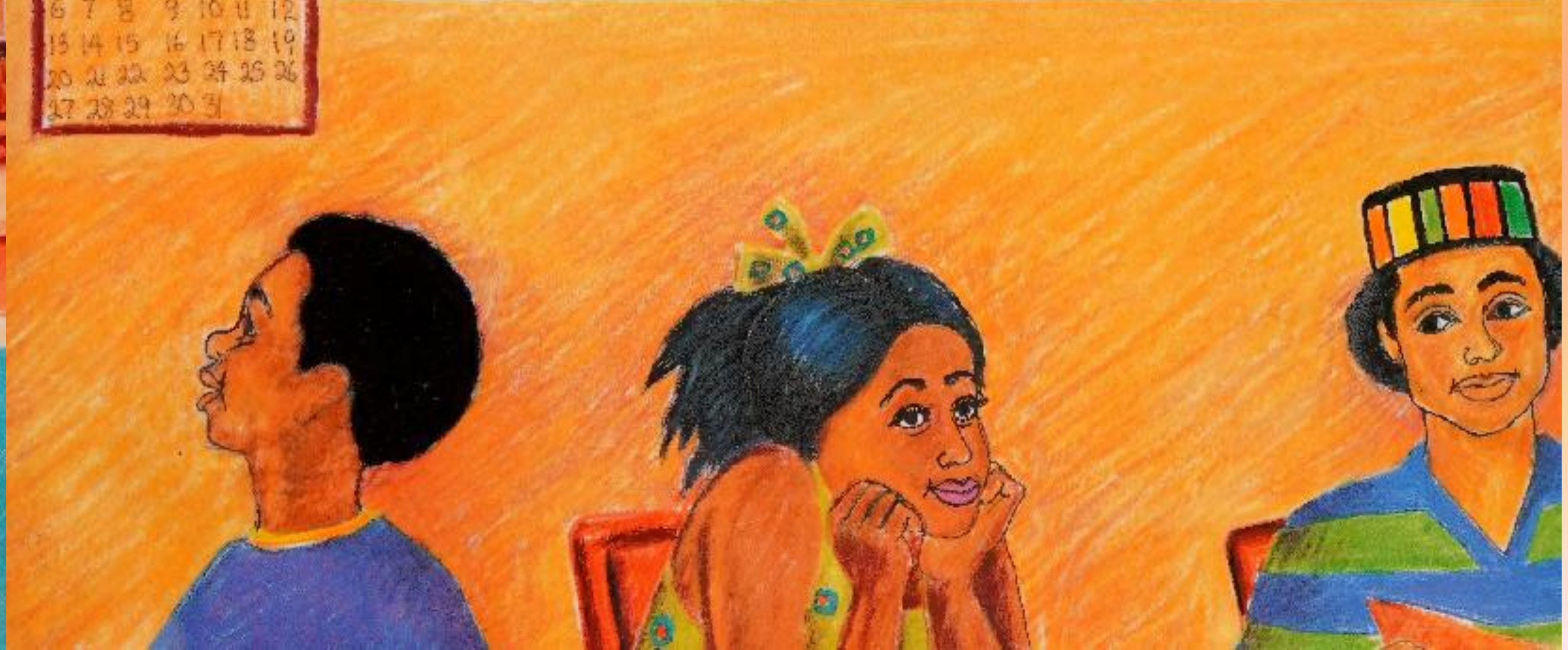


‘‘ओय! रशाद मेरे दोस्त! मैंने तुम्हारा नम्बर पुकारा है। मेरी कुर्सी पर आ बैठो। बताओ आज किस शैली में बाल कटवाने हैं – कॉलेज कट, शैग, फेड क्लार्क, या गम्बी?’’ मिस्टर बिगलो ने झूमते हुए पूछा। ‘‘या फिर मेरी खास डीलक्स शैली में?’’

नाई की दुकान बाल कटवाने आए लोगों से भरी थी। छोटे लड़के, बड़े लड़के। नौजवान, बुज़ुर्ग। यहाँ तक कि एक लड़की भी अपने बाल कटवाने बैठी थी। वे सब शहर के सबसे बेहतरीन नाई का इन्तज़ार में थे।

‘‘मैं अपने हाथ बढ़ा गढ़ और रच सकता हूँ। तो बताओ, आज क्या चाहते हो?’’

‘‘आज आपका खास डीलक्स ही हो जाए,’’ रशाद ने कहा।

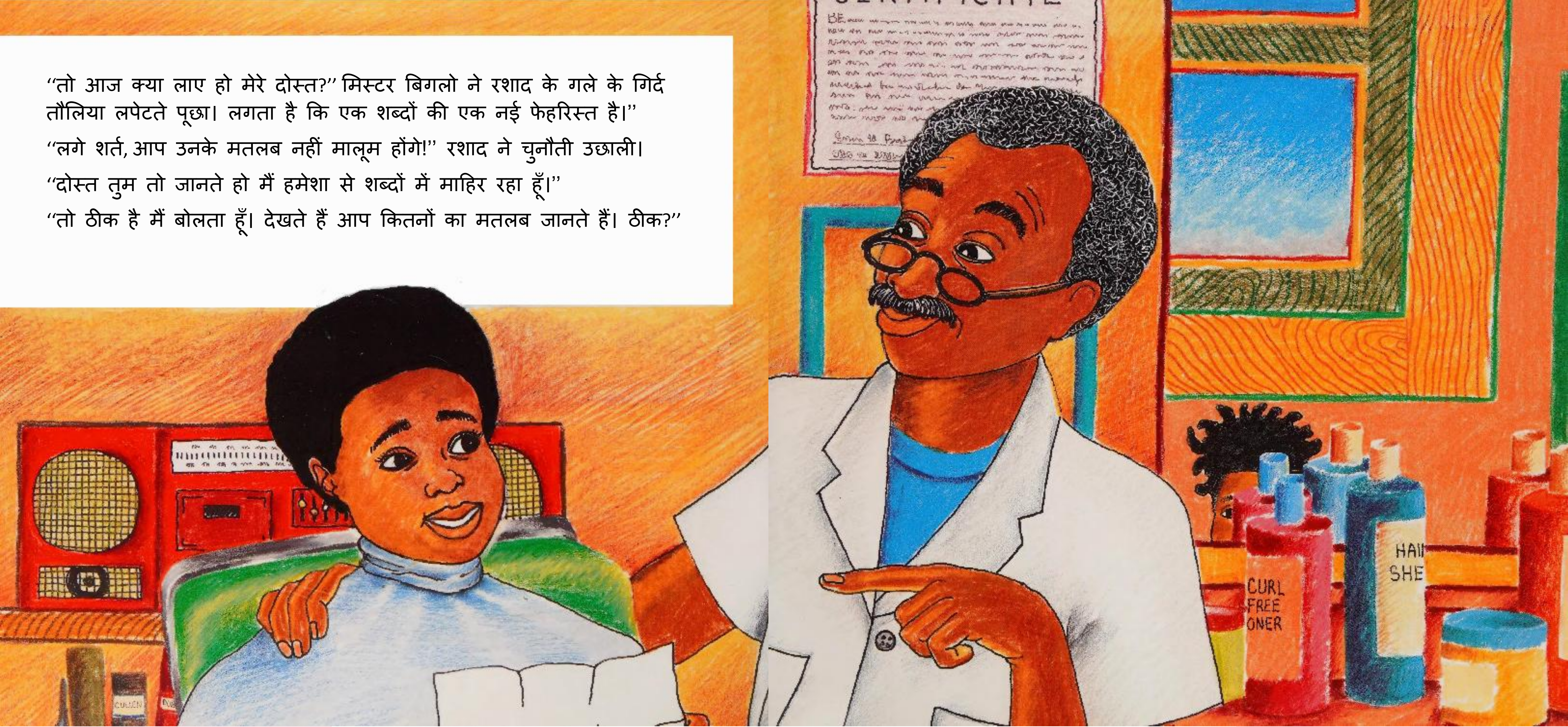


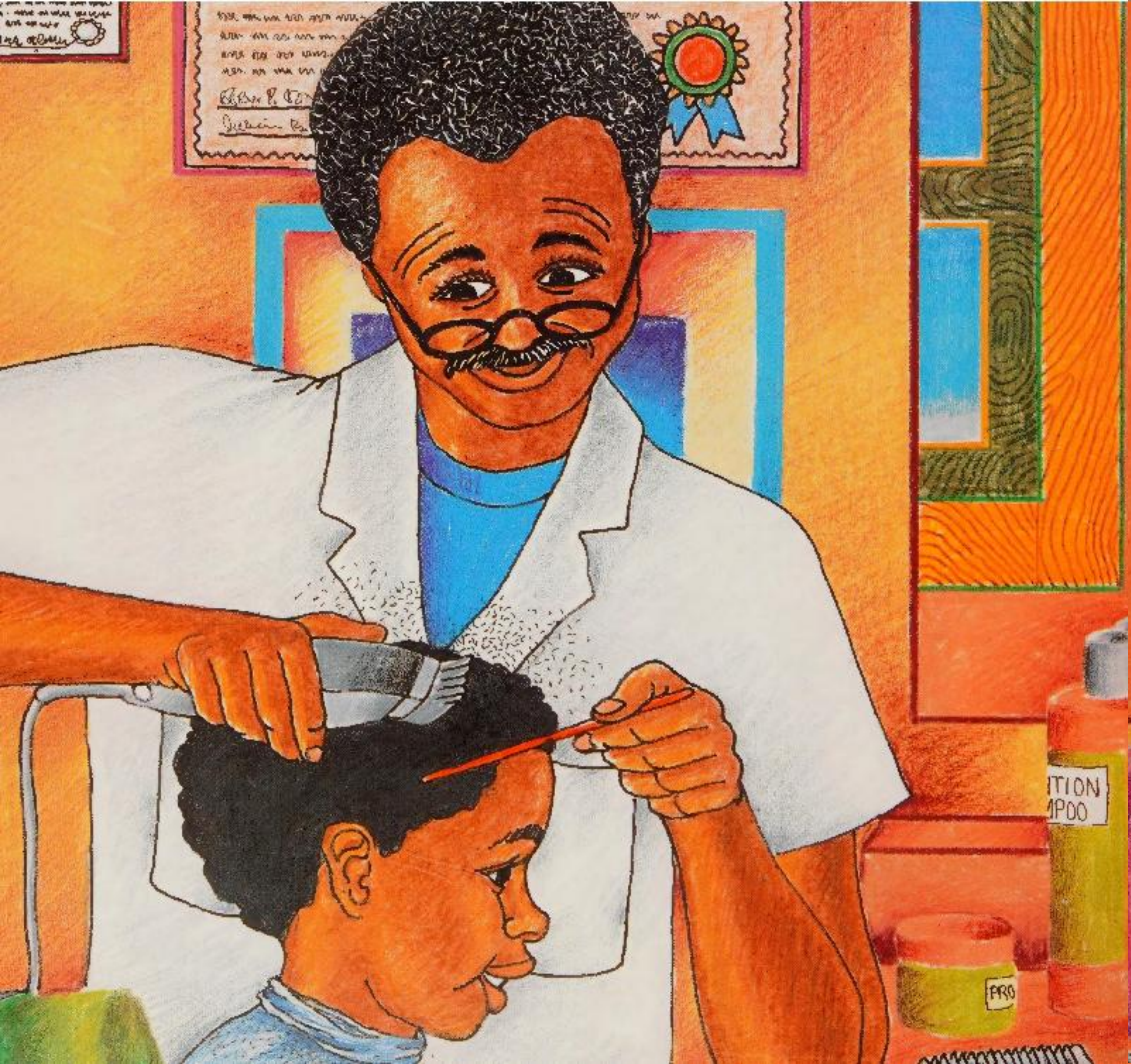
''तो आज क्या लाए हो मेरे दोस्त?'' मिस्टर बिगलो ने रशाद के गले के गिर्द तौलिया लपेटते पूछा। लगता है कि एक शब्दों की एक नई फेहरिस्त है।''

''लगे शर्त, आप उनके मतलब नहीं मालूम होंगे!'' रशाद ने चुनौती उछाली।

''दोस्त तुम तो जानते हो मैं हमेशा से शब्दों में माहिर रहा हूँ।''

''तो ठीक है मैं बोलता हूँ। देखते हैं आप कितनों का मतलब जानते हैं। ठीक?''





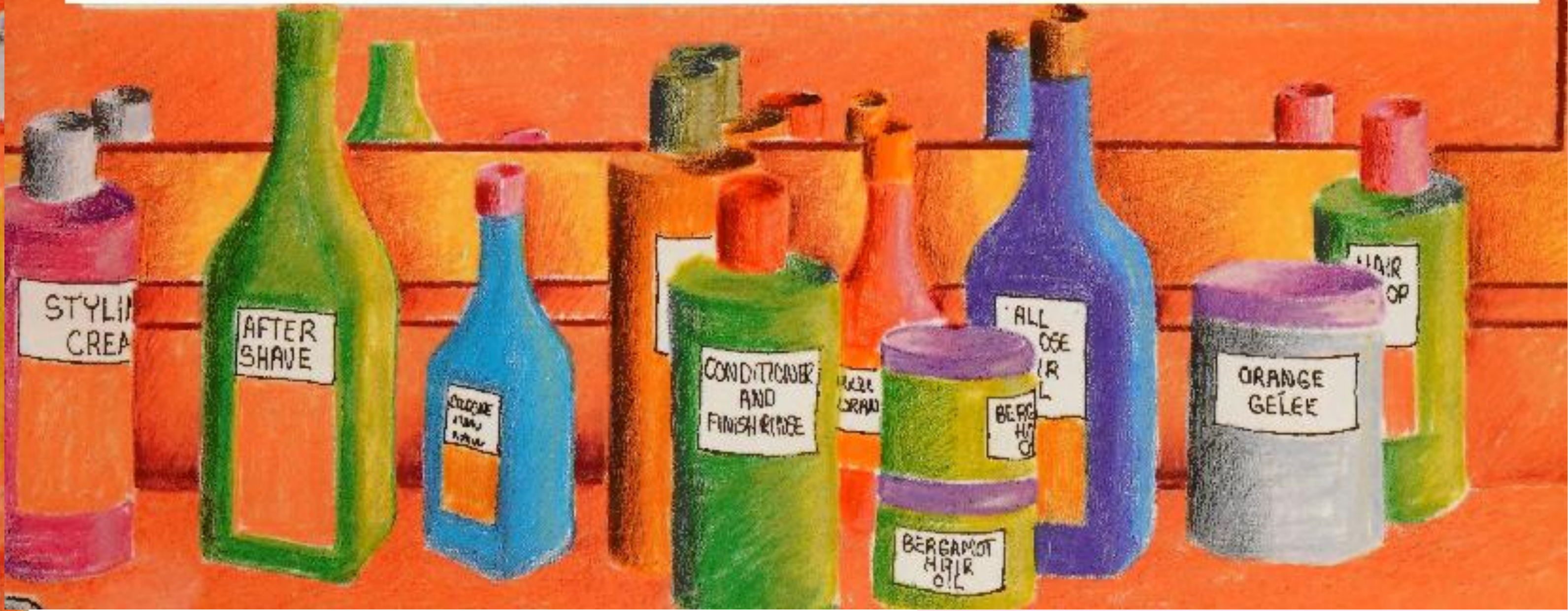
''चलो पूछो!'' मिस्टर बिगलो ने अपनी बाल काटने के धारदार क्लिपर्स को रशाद के सिर पर पर घुमाते कहा।

ज़ूम्म्म्म्म्म्म!

रशाद को पूरा भरोसा था कि वह आज तो मिस्टर बिगलो को मात दे सकेगा। ये शब्द कठिन थे। उसे इस फेहरिस्त को बनाने में मदद लेनी पड़ी थी। उसके डैडी ने शब्द बोले थे और ममा ने उनके मतलब चार-चार बार लिखवाए थे। और तब उसकी बहन ने उसे पाँच-पाँच बार दोहराते सुना था।

''तो ठीक है, आपने ही हामी भरी है!'' रशाद बोला। ''संभ्रम (बिविल्डरमेंट) का क्या मतलब होता है?''

मिस्टर बिगलो, पल भर रुके तक नहीं। ''रशाद मेरे दोस्त यह तो आसान है। संभ्रम का मतलब होता है हैरानी या उलझन में होना।''





“अरे बाप! आज तो आप पूरे रंग में हैं,” रशाद ने कहा। पर यह आप बता ही नहीं सकेंगे। उन्मूलन (एबॉलिश) का क्या मतलब होता है।?”

“अरे भई उन्मूलन का मतलब है खत्म करना या बन्द करना।”

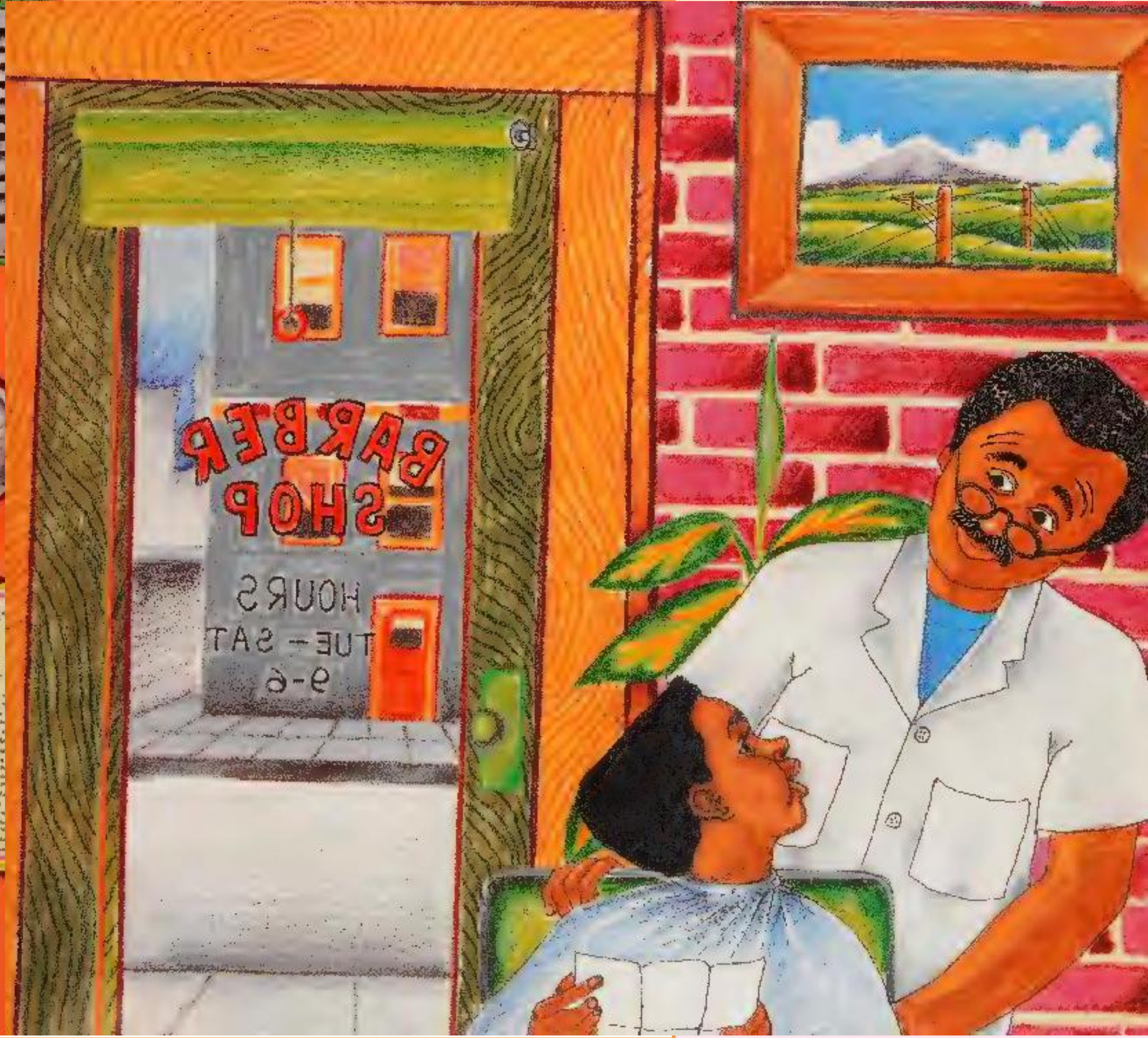
“मिस्टर बिगलो यह तो आसान शब्द था। अब बेसाख़्ता (इडियोसिन्क्रैटिक) का मतलब बूझिए।”

"क्या तुम्हें इसका मतलब मालूम है?" मिस्टर बिगलो ने हैरान होने का नाटक करते पूछा।

रशाद ने मतलब याद करने की कोशिश की, पर उसे याद न आया। "ना, मैं नहीं जानता," उसने कुर्सी में छटपटाते कहा।

"अरे, सीधे बैठो मेरे दोस्त! अगर इसी तरह हिलते-डुलते रहे तो बालों को एक गुच्छा गायब हो सकता है। जब तुम ही शब्द का मतलब नहीं जानते, तो जानने की उम्मीद मुझसे क्यों? पर कोई मसला नहीं मैं इस शब्द को जानता हूँ।"

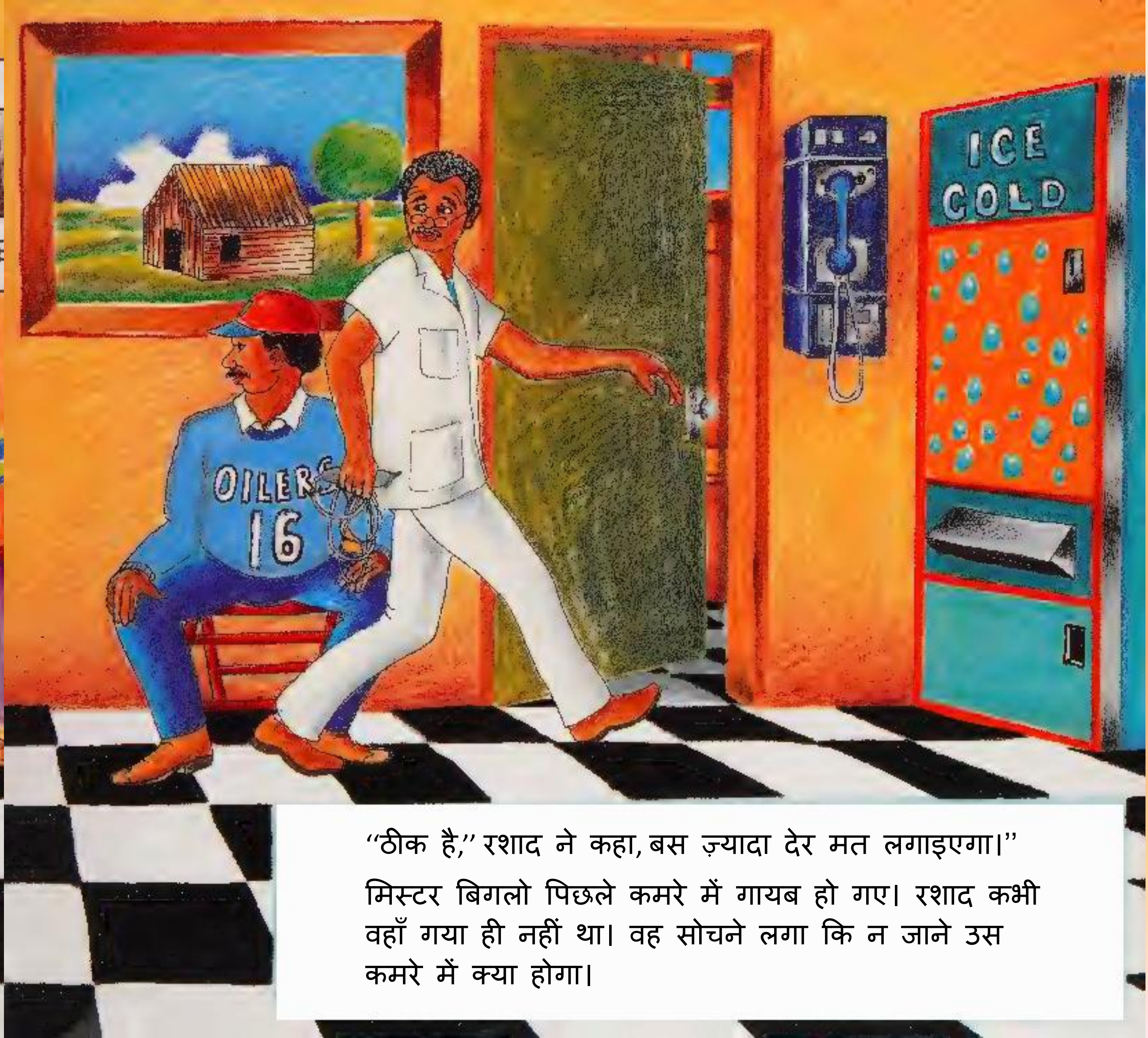






मिस्टर बिगलो की क्लिपर मशीन अचानक रुक गई।

“अम्म, मम्म! मैं मान ही नहीं सकता! रशीद मेरे दोस्त मुझे मेरे क्लिपर की मरम्मत करनी होगी। यह स्क्रू अन्दर टिक ही नहीं रहा। कल रात ही तो मैंने इसे कसा था। अब अपनी जगह से हिलना मत। बैठे रहना, मैं बस फौरन आया।



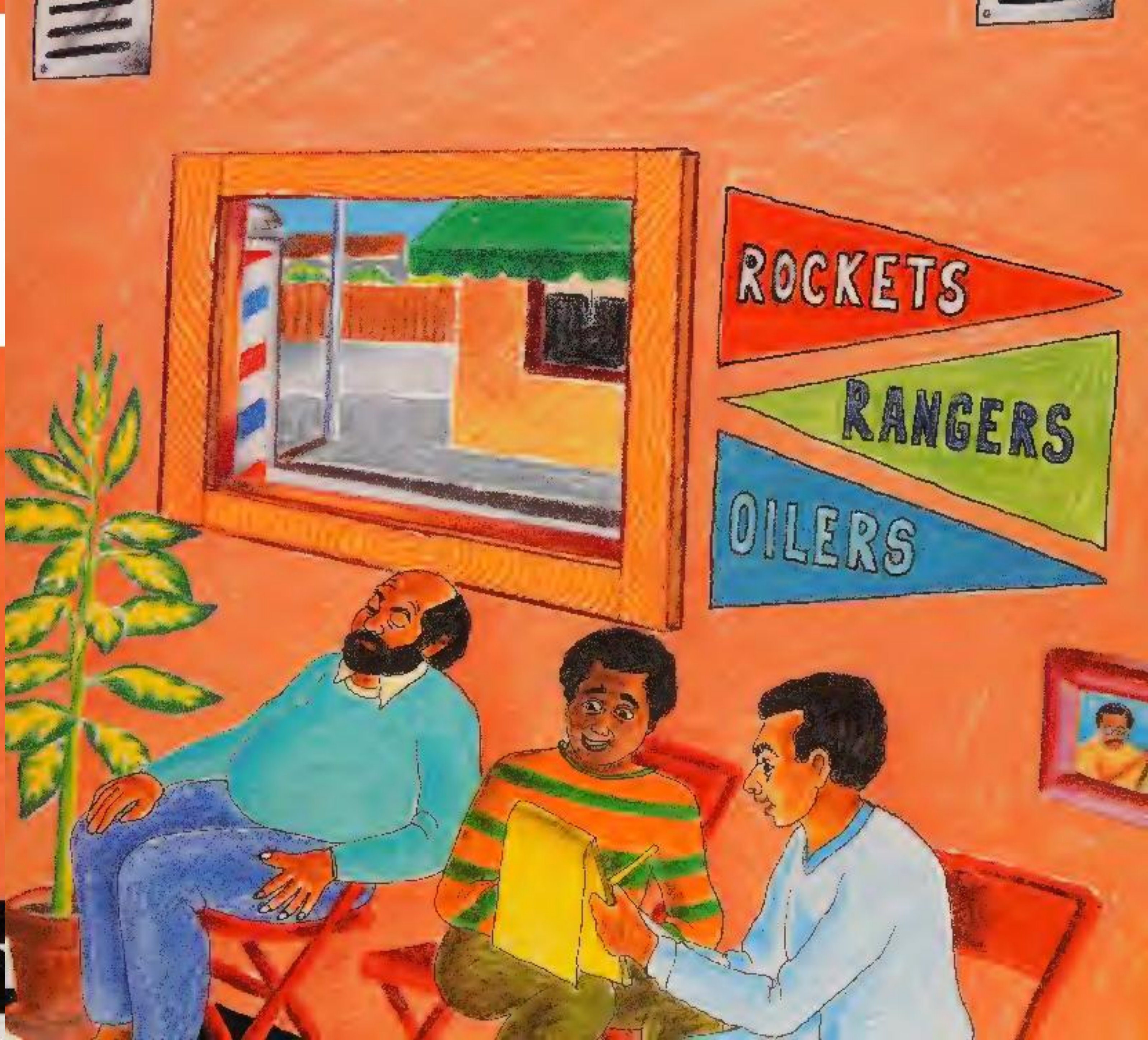
“ठीक है,” रशाद ने कहा, बस ज़्यादा देर मत लगाइएगा।”

मिस्टर बिगलो पिछले कमरे में गायब हो गए। रशाद कभी वहाँ गया ही नहीं था। वह सोचने लगा कि न जाने उस कमरे में क्या होगा।

रशाद ने दुकान में चारों ओर नज़र दौड़ाई। उसके डैडी मिस्टर हकबी के साथ लकड़ी की टेबल पर डोमिनोस् खेल रहे थे।

दुकान में दस लोहे की बन्द होने वाली कुर्सियाँ रखीं थीं। सभी पर लोग बैठे थे। सब धीरज धारे मिस्टर बिगलो के लिए इन्तज़ार कर रहे थे। सब जानते थे कि कुर्सी छोड़ उठना नहीं है। क्योंकि पलक झपकते ही कोई नया ग्राहक वहाँ आ बैठेगा।







''माफ़ करना मेरे दोस्त, उम्मीद है मैंने बहुत समय नहीं लगाया,'' मिस्टर बिगलो पिछले कमरे से निकलते हुए बोले।

उन्होंने लापरवाही से अपना क्लिपर उठाया और रशाद के बाल फिर से काटने लगे।

ज़ूम्म्म्म्म्म्म्म!

''हाँ तो वह पिछला शब्द क्या था? मैं क्लिपर ठीक करने गया तो मेरा ध्यान भटक गया। हाँ याद आया, बेसाख़्ता। इसका मतलब होता है सनकी या अजीबोगीब।''



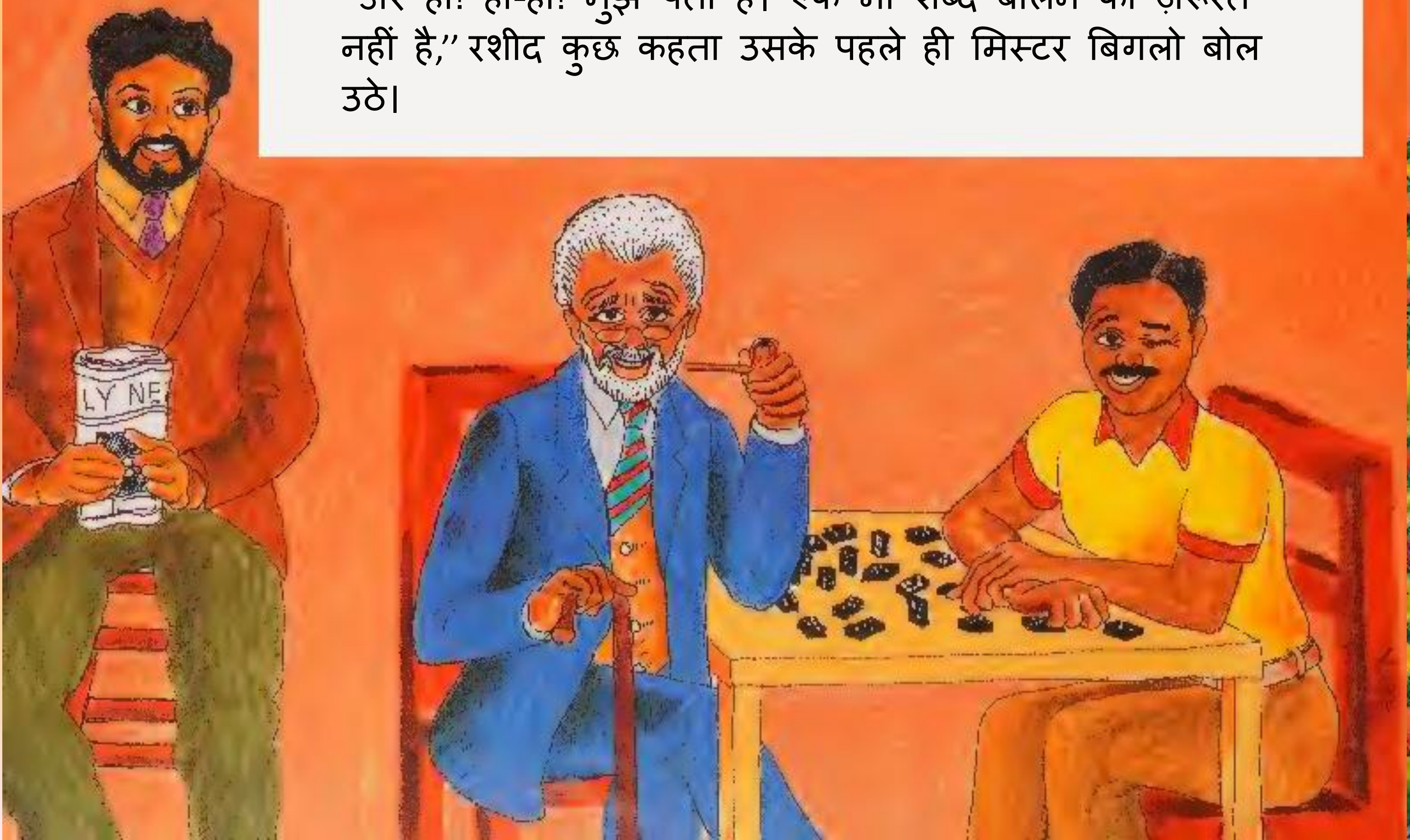
रशाद और उसके डैड़ी ने एक-दूसरे को देखा। डैडी ने आँख मारी।

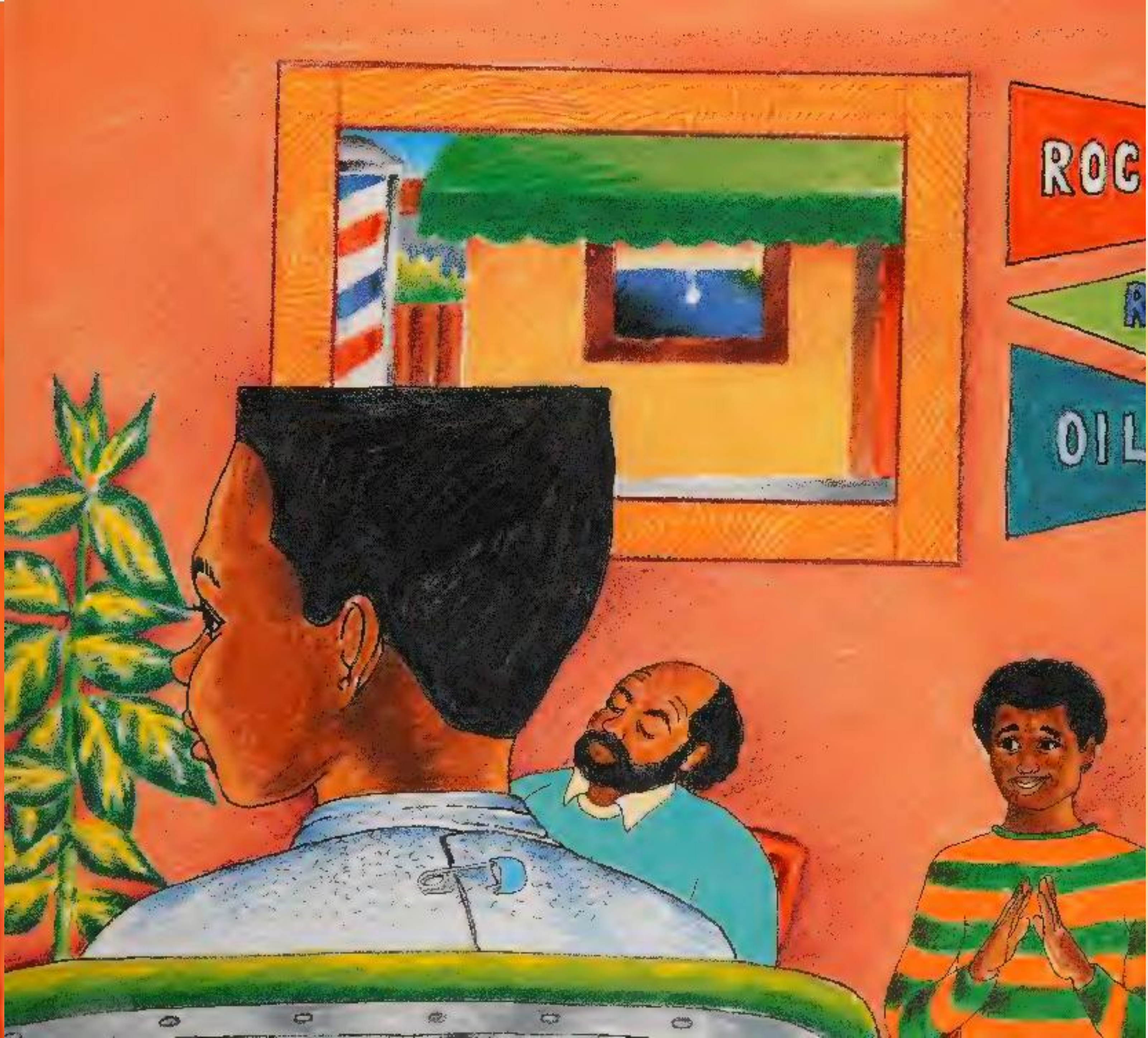
“सही है,” रशाद ने कहा।

“तुम्हें कैसे पता कि सही है?” मिस्टर बिगलो ने जानाना चाहा। “तुम तो मतलब जानते ही नहीं थे।”

रशाद ने अपने डैडी की ओर देखा। वे मुस्कुराए।

“अरे हाँ! हाँ-हाँ! मुझे पता है। एक भी शब्द बोलने की ज़रूरत नहीं है,” रशीद कुछ कहता उसके पहले ही मिस्टर बिगलो बोल उठे।





“ख़ैर मिस्टर बिगलो, इस बार एक बेहतर शब्द है” रशीद ने बात बढ़ाई। “अस्पष्ट का क्या मतलब होता है?”

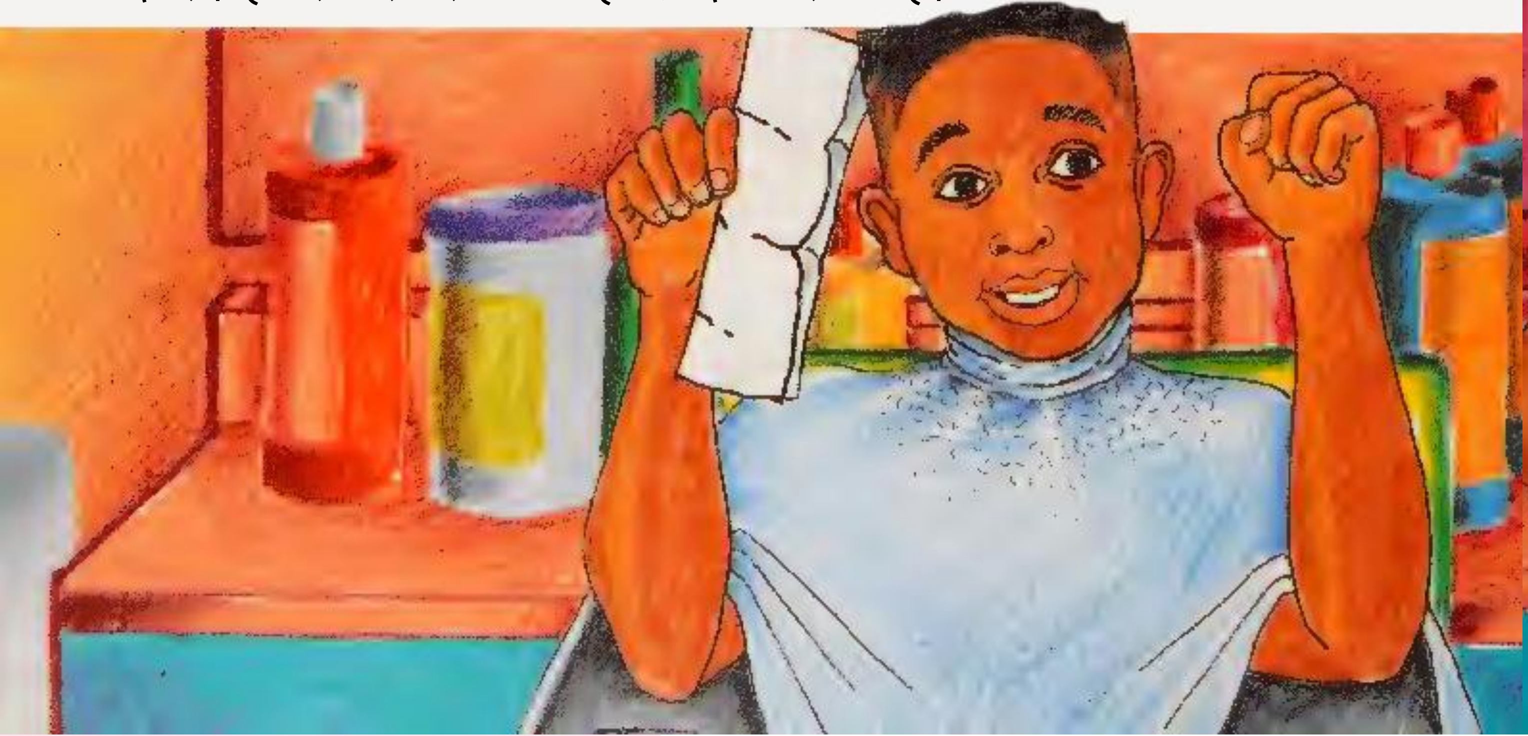
“ओह अस्पष्ट का मतलब होता है बिलकुल साफ,” मिस्टर बिगलो ने जवाब दिया।

“नहीं, नहीं! ग़लत!” रशाद चीखा।

“ओह माफ़ करना, मैं कहना चाह रहा था नासाफ़ या गोल-मोल। क्या यह बेहतर जवाब है।”

“मिस्टर बिगलो, अब मज़ाक बन्द करें। मैं इस शब्द परीक्षा का एक भी शब्द छोड़ना नहीं चाहता।”

“ठीक है मेरे दोस्त। तुम सही इन्सान से पूछ रहे हो। मुझे आरंभिक-शाला से लेकर कॉलेज तक के सभी शब्दों का मतलब पता है। तुम बस नया शब्द बताओ। पर जल्दी से। हमारे पास सिर्फ एक ही शब्द का समय है।”



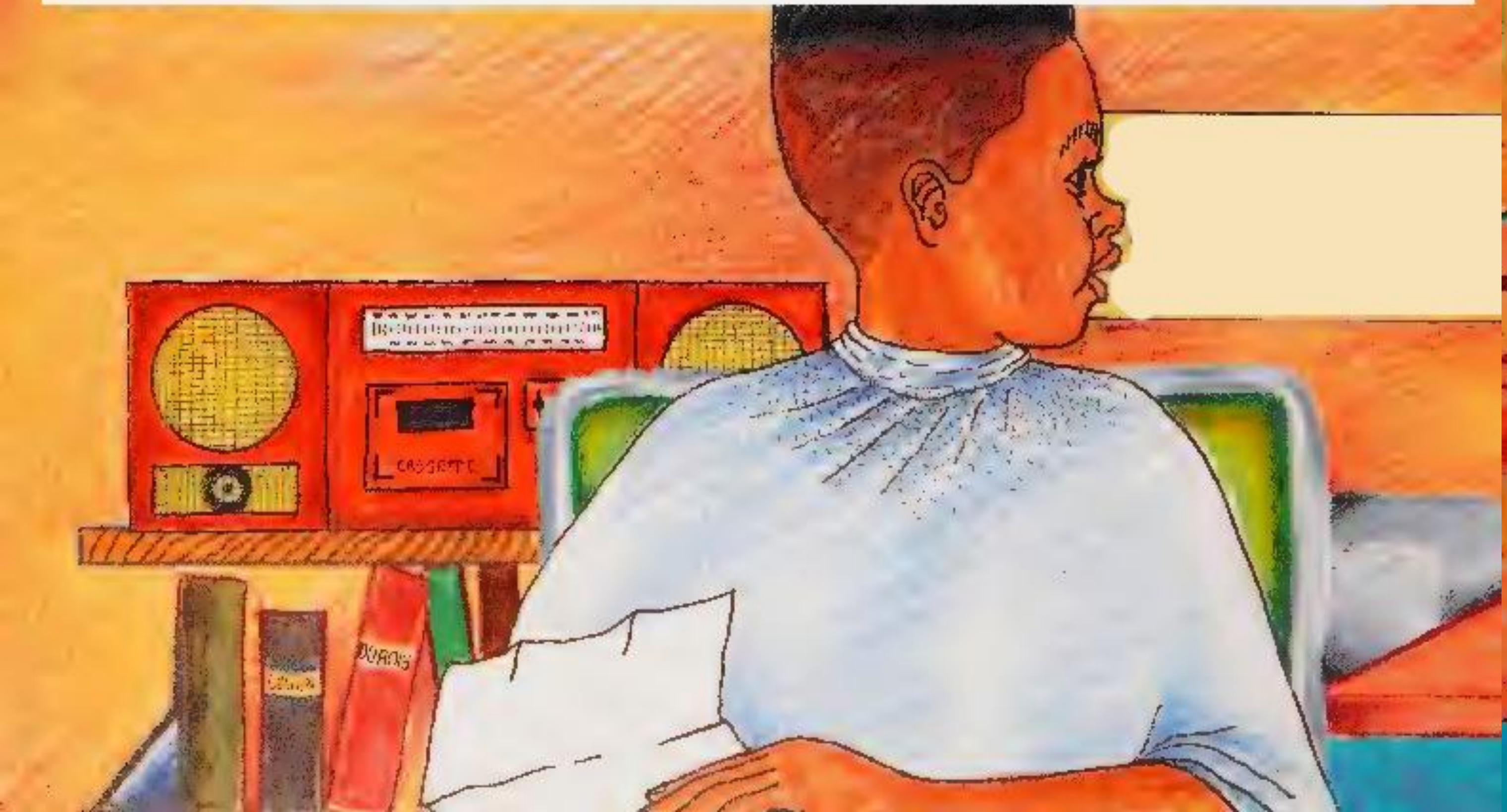


''क्या बालों की कटाई पूरी हो गई?'' रशाद ने आईने में पीछे की ओर देखते पूछा।

''और क्या? अब ज़्यादा समय नहीं लगेगा। चलो पूछो।''

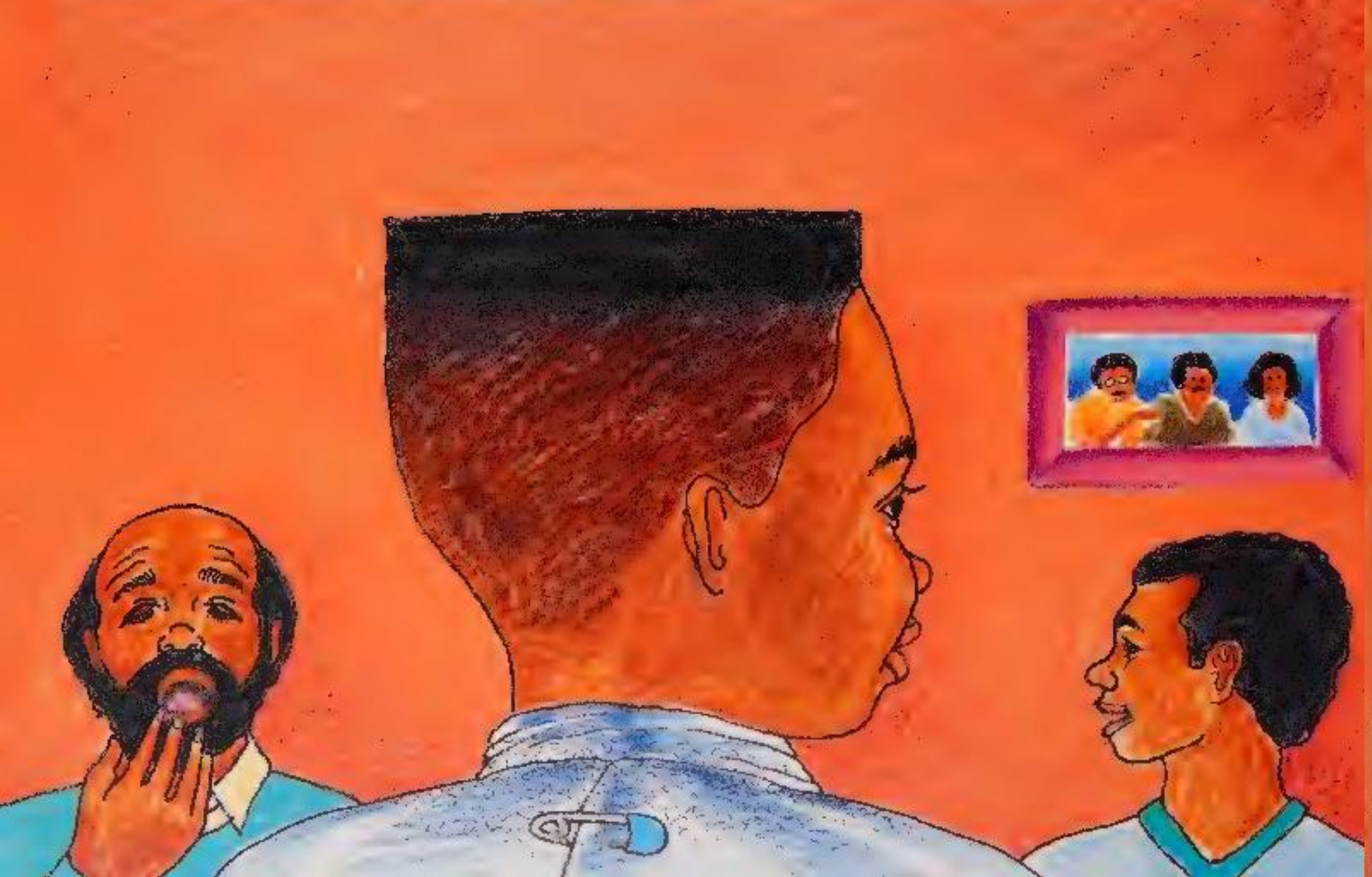
''अगला शब्द है निकेत (नीश)। इसका क्या मतलब है?''

''ओह मैं जानता हूँ। मैं इसका अक्सर इस्तमाल भी करता हूँ,'' मिस्टर बिगलो ने हंस कर कहा। ''अरे लो! सरा पाउडर ही खत्म हो गया। पर कोई बात नहीं, मेरे पिछले कमरे में शायद एक नया डब्बा है। मैं जाकर देखता हूँ। मैं फौरन वापस आया।''





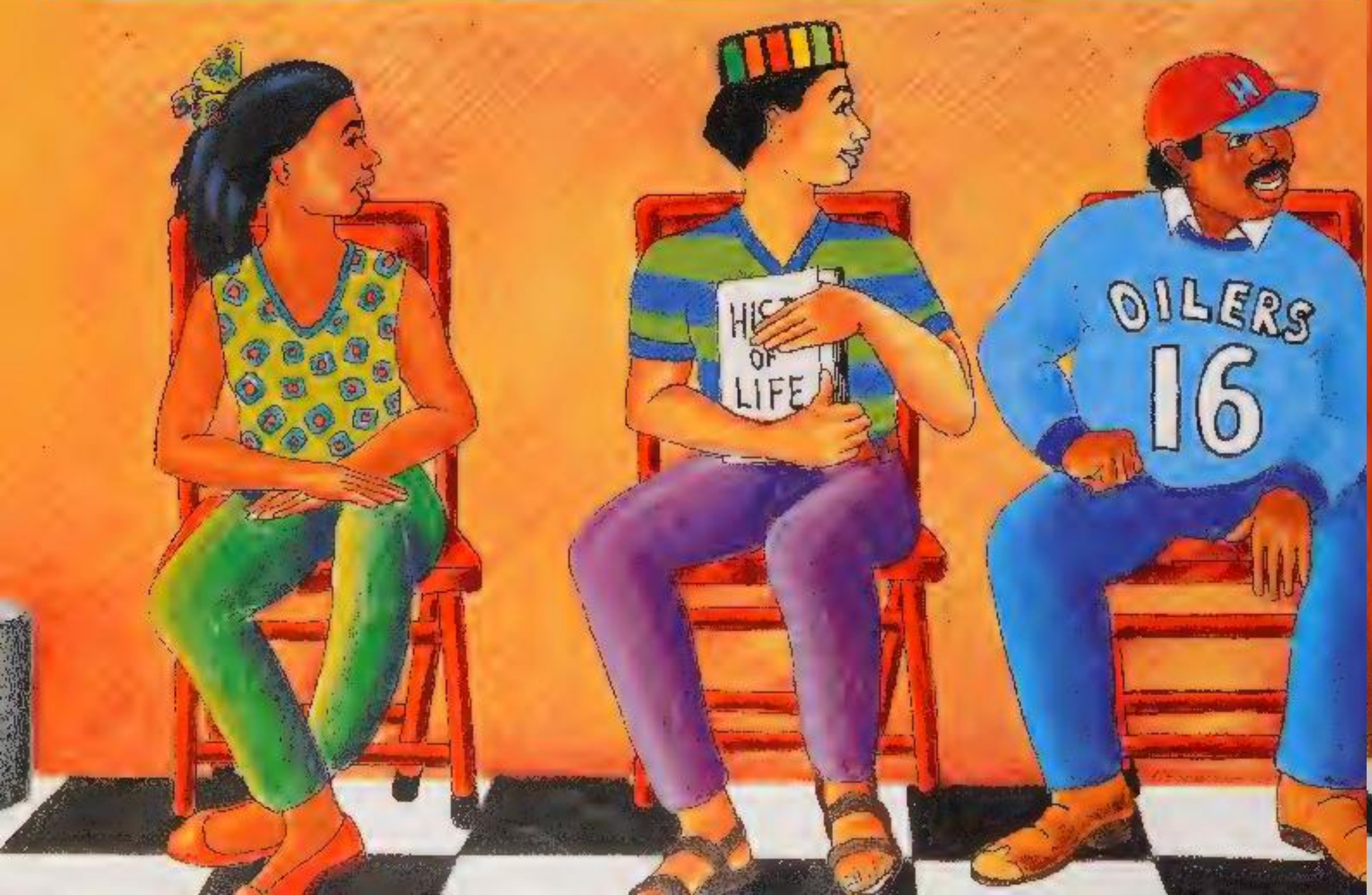
रशाद ने इन्तज़ार किया . . . और इन्तज़ार किया . . . और-और इन्तज़ार किया। मिस्टर बिगलो बड़ा समय लगा रहे थे।





रशाद बेचैन होने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसकी जेब में मशीन से एक सोडा खरीदने के पैसे थे। और फिर मशीन पिछले कमरे के पास थी। रशाद हमेशा से जानना चाहता था कि उसमें है क्या।

वह बाल कटवाने वाली कुर्सी से उतरा और मशीन तक गया। पिछले कमरे का दरवाज़ा हल्का सा खुला था।





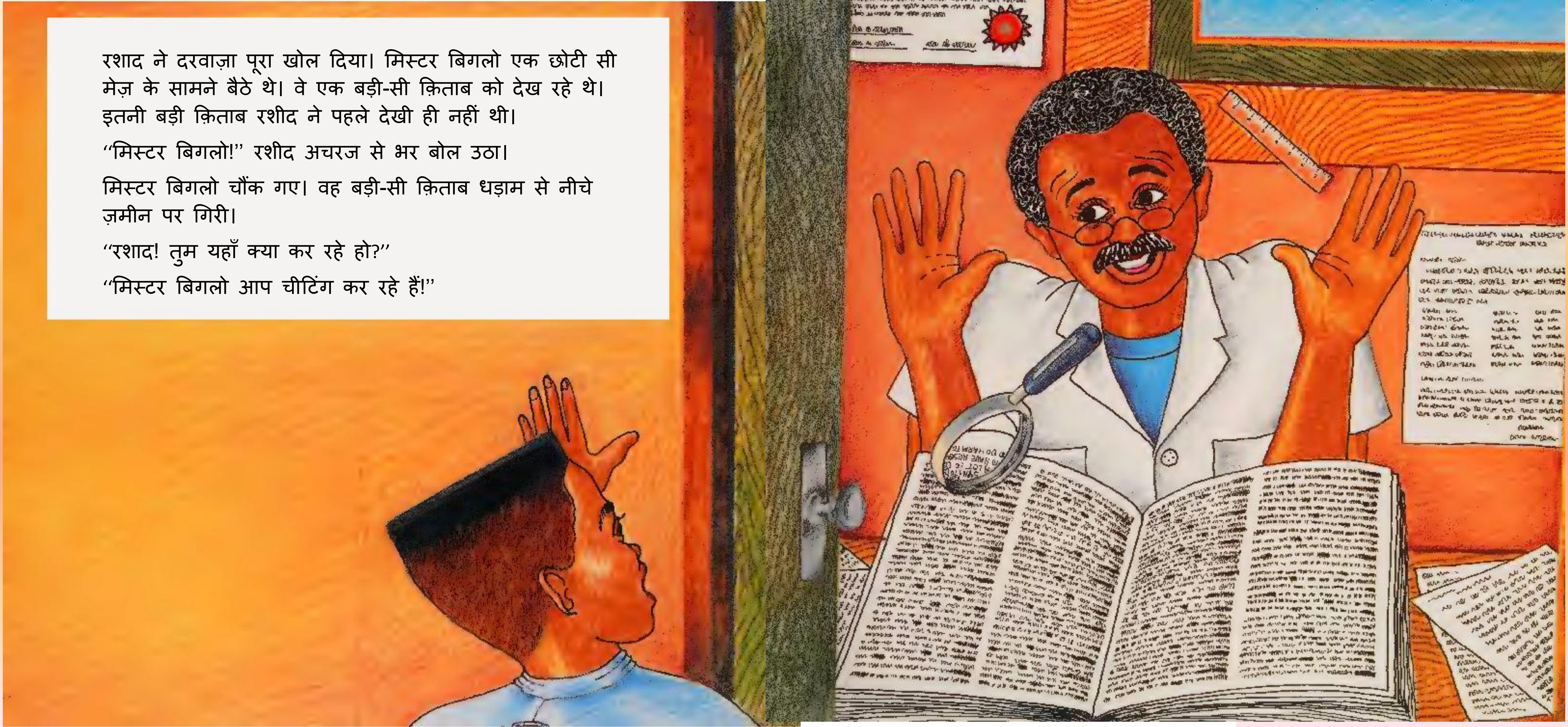
रशाद ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया। मिस्टर बिगलो एक छोटी सी मेज़ के सामने बैठे थे। वे एक बड़ी-सी क़िताब को देख रहे थे। इतनी बड़ी क़िताब रशीद ने पहले देखी ही नहीं थी।

“मिस्टर बिगलो!” रशीद अचरज से भर बोल उठा।

मिस्टर बिगलो चौंक गए। वह बड़ी-सी क़िताब धड़ाम से नीचे ज़मीन पर गिरी।

“रशाद! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

“मिस्टर बिगलो आप चीटिंग कर रहे हैं!”



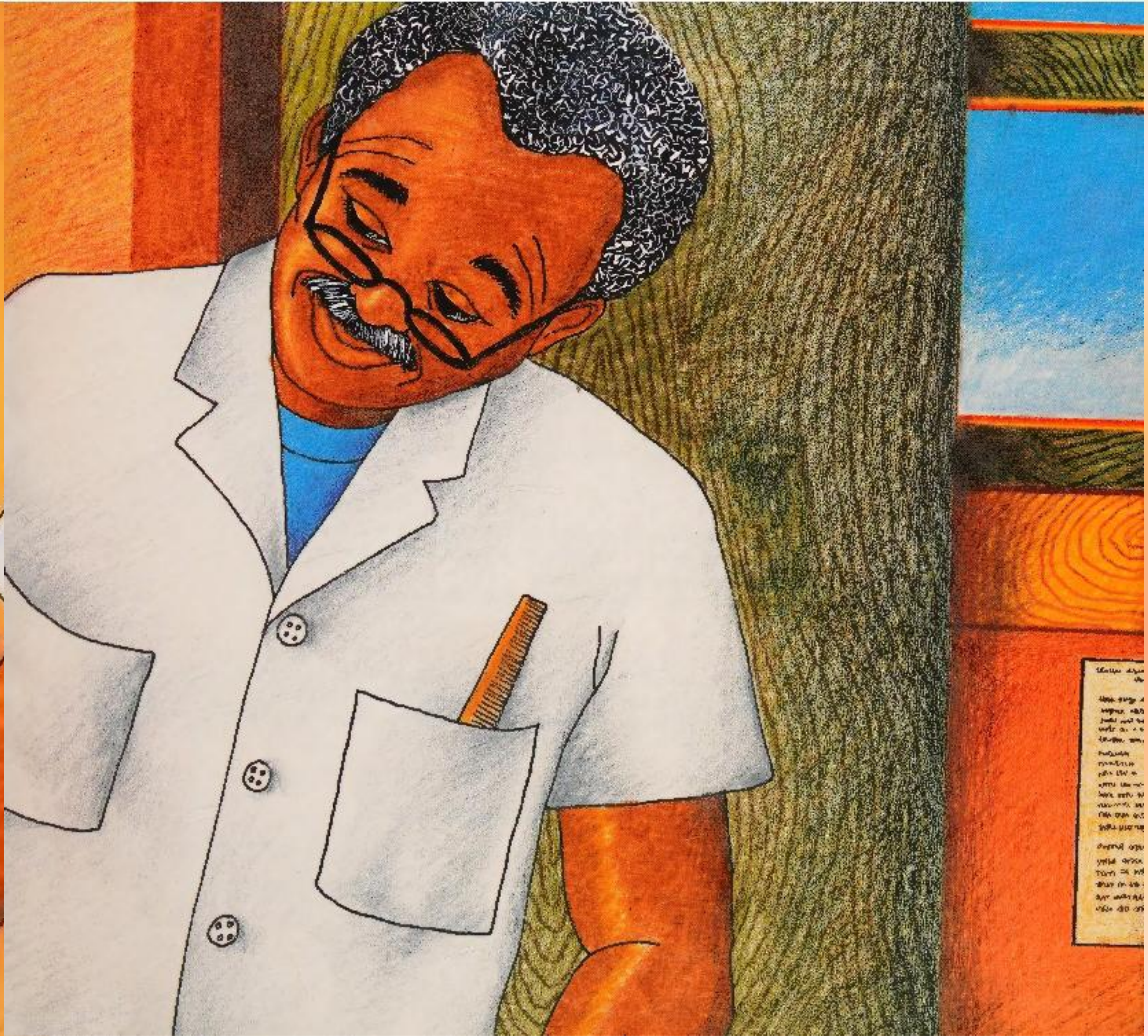
"मेरे दोस्त यह चीटिंग नहीं है!" मिस्टर बिगलो ने कहा। "मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे करना चाहिए। मैं अपने धंधे में औज़ारों का इस्तेमाल करता हूँ। अगर तुम्हें भी मेरी तरह बाल काटने की मशीन से बाल काटने हों, तो तुम्हें क्लिपर्स काम में लेने होंगे, उस पर धार लगाते रहनी होगी। इसी तरह अगर शब्द सीखने हों तो शब्दकोश यानी डिक्शनरी काम में लेनी होगी! इसे मैं अपना धार लगाने, पैना करने का तरीका कहता हूँ!"

"धार लगाने का तरीका?"

"बेशक। जैसा मैं हमेशा कहता हूँ। शब्द हैं मेरा खेल, नाम है मेरा बिगलो!"

रशाद ने हाँ में अपना सिर हिलाया और बोला "मिस्टर बिगलो आप सचमें एकदम शानदार इन्सान हैं!"







मेरे हमेशा साथ देने वाले परिवार को समर्पित, खास कर मेरे बेटे लैंस लैमॉन्ट लेवर्ट को, जिसने मुझे इस क़िताब को रचने का विचार और साहस दिया। टैक्सआर्क बारबर शॉप के मिस्टर जेम्स फोर्ट का विशेष आभार।

- ग्वैन्डोलिन बैटल-लेवर्ट

मेरी माँ कैरोलाइन होलबर्ट को समर्पित। मेरी पत्नी सूज़न डीमेरसेमै, मेरे बच्चों लॉरेन डेकोटा, ब्रायन जेम्स व ओनिका को, तथा हर समुदाय में मिस्टर बिगलो जैसे नाइयों को शुक्रिया।

- रेमण्ड होलबर्ट

ग्वैन्डोलिन बैटल-लेवर्ट पठन विशेषज्ञ हैं तथा पूर्व में आरंभिक शाला की शिक्षिका भी रह चुकी हैं। वे मैरियन, इण्डियाना में रहती हैं।

रेमण्ड होलबर्ट चित्रकार व कॉलेज में कला प्रशिक्षक हैं। वे ओकलैण्ड कैलिफोर्निया में रहते हैं।

रशाद अपने बाल शहर के सबसे बेहतरीन नाई से कटवाता है। नाम है उनका बिगलो और शब्द हैं उनका खेल - यही तो उनका धारदार औज़ार है। रशाद आज अपने बाल खास डीलक्स शैली में कटवाता है और मिस्टर बिगलो की सफलता की पैनी धार का राज़ जान लेता है।

